अंतरा-शब्दशक्ति

पर्यावरण संरक्षण के परंपरागत तरीके

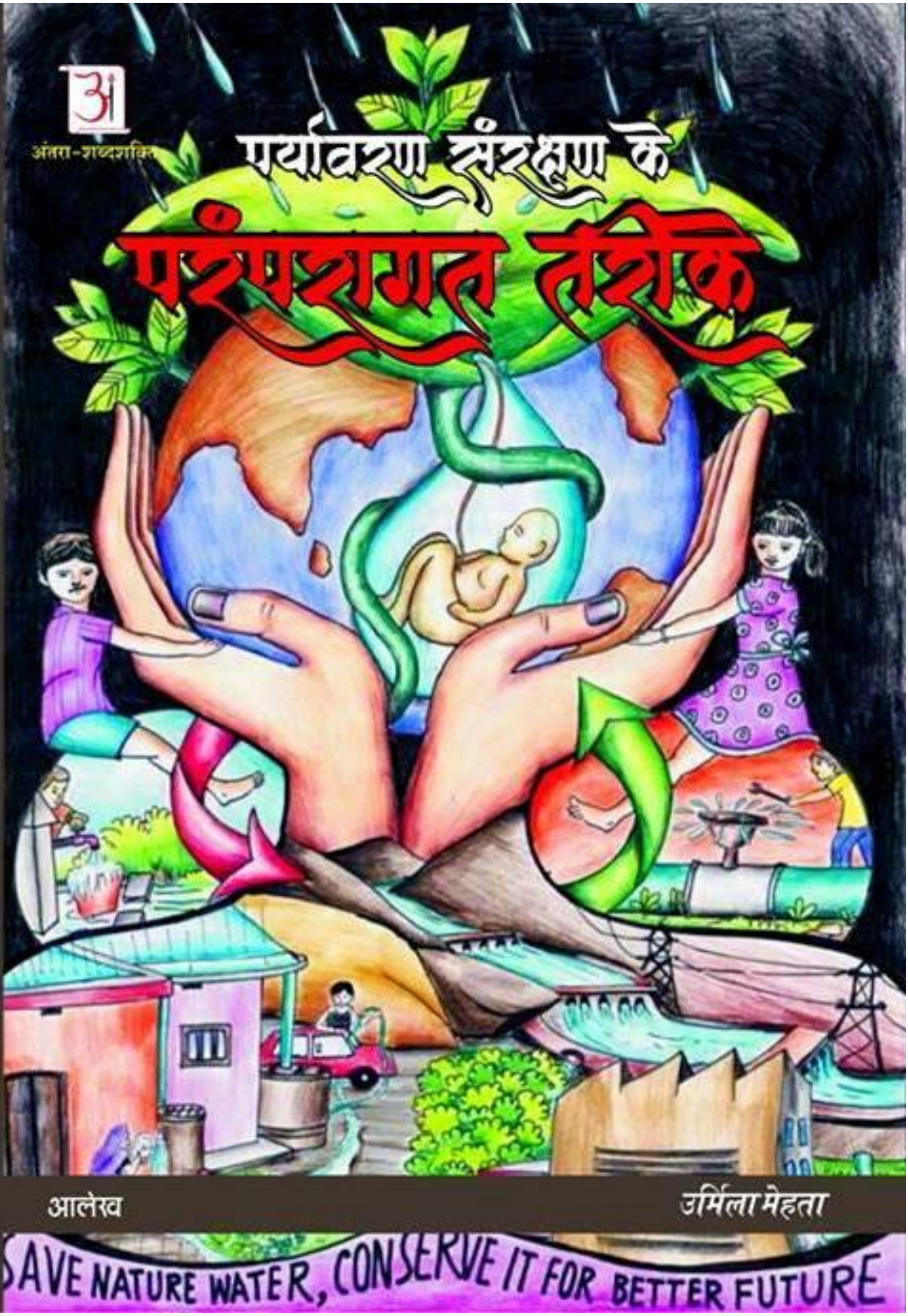

आलेख

उर्मिला मेहता

पर्यावरण संरक्षण के परम्परातगत तरीके

(आलेख)

उर्मिला मेहता, इन्दौर (म.प्र.)

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-41-3

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
शाकहा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ - उर्मिला मेह्ता
मूल्य - ४०.०० रुपये
आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Paryavaran Sanrakshan ke Paramparagat tarike by Urmila Mehta

वैधानिक चेतावनी- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

पर्यावरण संरक्षण के परम्परातगत तरीके

आलेख:- उर्मिला मेहता, इन्दौर (म.प्र.)

आधुनिक समय में पर्यावरण प्रदूषण की समस्या रक्तबीज की तरह बढ़ती जा रही है हमारे जल, थल और आकाश किसी न किसी कारण से प्रदूषित हो चुके है परिणामस्वरूप हमारे मन की शांति और तन का स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा है अतः हमे उन कारणों पर गंभीरता से विचार करना होगा जिनसे हमारा पर्यावरण प्रदूषित होता है साथ ही उन परम्परातगत तरीको पर भी ध्यान देना होगा जिनसे प्राचीन समय में पर्यावरण संरक्षण होता था इस हेतु व्यापक दृष्टिकोण रखते हुए देशी तथा विदेशी सभी तरीको पर प्रकाश डालना होगा क्योकि मानव तो सभी जगह एक ही है.

जनसंख्या वृद्धि, विभिन्न प्रकार के कचरे का साम्राज्य, वाहनों की भरमार, कल कारकहानों का अत्यधिक उपयोग, वृक्षों की कटाई, नदियों में शव तथा अन्य प्रकार की गंदगी डाला जाना आदि ऐसे कारण है जिनसे पर्यावरण प्रदूषित होता है इस प्रदूषण को रोका जा सकता है यदि हम उपयुक्त कारणों को दूर करने का संकल्प करे प्रकृति ने हमे सूर्य, जल, वृक्ष तथा वायु के रूप में शास्वत वरदानो से उपकृत किया है परन्तु एक और जहां हम इन वरदानो का समुचित लाभ नहीं उठा पाते वहीं दूसरी और प्राकृतिक सम्पदा का अत्यधिक दोहन करते है।

जिसका कहामिया हमे भुगतना पड़ता है वायुमंडल की संरक्षक परत में छेद भी पर्यावरण की सुरक्षा को बाधा पहुँचता है "ग्लोबल वार्मिंग" अर्थात पृथ्वी का तापमान बढ़ जाना भी पर्यावरण के लिए बहुत हानिकारक तत्व है आतंकवादी गतिविधियों से बचाव हेतु किये गए परीक्षण जैसे पोखरण में अणु विस्फोट भी हमारे

पर्यावरण को प्रदूषित करते है यत्र तत्र सर्वत्र प्लास्टिक का बोलबाला भी प्रदूषण फैलाने में बहुत बड़ी भूमिका निभाता है।

इतनी भूमिका लिख़ने से मेरा तात्पर्य यही है कि हमारा पर्यावरण मुख्य रूप से किन-किन कारणों से प्रदूषित और बुरी तरह प्रभावित होता है ताकि हम पर्यावरण संरक्षण के परम्परागत तरीको पर पुनः विचार कर सके निश्चित रूप से हमे उन प्रदूषण पर भी ध्यान देना होगा जो आधुनिक काल की देन है। पर्यावरण प्रदूषण पूरे विश्व की समस्या है। अतः हमे ध्यान देना होगा जो प्रकृति है, सस्ते, सुलभ और प्रभावशाली है तथा ऊर्जा, बिजली, गैस और कृषि के लिए कहाद उपलब्ध कराते है।

पर्यावरण दूषित करने वाला सबसे बड़ा तत्व जनसंख्या का निरंतर बढ़ते जाना है। प्राचीन समय में जनसंख्या ने इतना विकराल रूप नहीं धारण किया था फलस्वरूप सभी व्यक्तियों के कहाते में शुद्ध हवा, पानी, जमीन और आकाश भरपूर मात्रा में रहते थे। पहले तो लोग साधा कहाना कहाते थे, और मोटा कपड़ा पहनते थे, जिससे उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहता था। परिश्रम करने और पैदल चलने की आदत के कारण कई लोग शतकवीर हो जाते थे। आधुनिक समय में जनसंख्या इतनी अधिक हो गई है कि उनकी मूलभूत आवश्कताओ की पूर्ति करना भी टेड़ी खीर सा हो गया है। ग्रीष्मकाल में पानी के लिए संघर्ष करना, शिक्षित हो जाने के बाद नौकरी के लिए संघर्ष करना तथा जमीन के कारण शुद्ध हवा के लिए संघर्ष करना आज बिल्कुल आम बात हो गई है। चेन्ज के लिए लोग मैदान छोड़ कर पहाड़ो पर जाते है। पर अब वहाँ पर भी वो बात नहीं रही क्योकि अब वहाँ पर भी कहासी भीड़ नजर आती है जो अपने वाहन और कहाने की वस्तु के त्याज्य पदार्थ द्वारा पहाड़ी इलाके को प्रदूषित कर देती है। पर्यावरण का सीधा सम्बन्ध जनसंख्या से है। अतः अब यह अति अनिवार्य सा हो गया है कि परिवार नियोजन कार्यक्रम को सख्ती से लागू किया जाये। प्रत्येक नागरिक चाहे वह किसी भी धर्म सम्प्रदाय का हो एक या दो बच्चो का कानून लागु कर देना चाहिए।

कानून न मानने पर अर्थदंड और सजा का प्रावधान होना चाहिए ताकि जनसंख्या पैर नियंत्रण किया जा सके और देश के सभी नागरिको को रोजगार, रोटी, कपड़ा और मकान हासिल हो सके। संस्कृत में तो कहा भी गया है कि शेरनी एक बच्चे के होते हुए भी बड़ी चैन की नींद सोती है, जबकि गर्द भी (गधी) दस पुत्रो के रहते हुए भी अशांत रहती है।

देश का सबसे बड़ा सिरदर्द विभिन्न स्थानों पर जमा और फैला कचरा है। कचरे से प्रदूषण तो फैलता ही है। यह जनमानस के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव डालता है। इसके विपरीत स्वच्छता से मन प्रसन्न रहता है और शरीर तंदुरुस्त। प्रसन्नता और शांति मनुष्य के जन्म सिद्ध अधिकार है, जो उसे मिलने हे चाहिए। अतः पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता और ऊर्जा प्राप्ति हेतु ऐसे पॉवर हाउस या संयंत्र लगाने चाहिए जिससे बिजली, गैस या कहाद बनाई जा सके। पूर्वी इंग्लैंड के केम्ब्रिज शायर ने ऐली में इंग्लैंड में ब्रिटेन के नवीनकरण योग्य ऊर्जा की शीषस्थ कंपनी एनर्जी पॉवर रिसोर्सेस (ई.पी.आर.) ने एक ऐसा संयंत्र लगाया है जिससे ईंधन के रूप में पुआल तथा अन्य कई तरह का बायो ईंधन तथा प्राकृतिक गैस का उपयोग होता है। इस संयंत्र से ३८ मेगावाट बिजली का उत्पादन होता है तथा ५० लोगो को प्रत्यक्ष रोजगार मिलता है। यह बिजली ८० हजार घरो की जरूरत पूरी करती है। ई.पी.आर. स्कॉट लैंड के फाइव में भी प्रोद्योगिक में सर्वाधिक उन्नत बिजली घर का परीक्षण किया गया जो एक साल में १० मेगावाट बिजली बनाएगा। ऐसा करने से करोड़ो टन कोयले की बचत होगी तथा नदियों पर बाध बनाने की आवश्कता में भी कमी आएगी और सबसे बड़ी बात पर्यावरण का संरक्षण होगा। कचरे से बनी गैस का उपयोग यदि वाहनों में भी होने लगे तो पेट्रोल डीजल की खपत अपने आप कम हो जाएगी। उस स्थिति में पेट्रोल डीजल सस्ते हो जायेगे सम्भव हुआ तो निर्यात कर धन भी कमाया जा सकेगा। अतः आवश्यकता इस बात की है कि आवश्यकतनुसार कचरा पेटी की

स्थापना हो और प्रतिदिन उन्हें कहाली करके पॉवर- हाउस तक पहुंचाया जा सके। इसके लिए सूखे हुए कुए आदि का इस्तेमाल किया है। इंग्लैण्ड में तो मुर्गी कहाने के करकट व पुराने टायरों से बिजली बनाई जाती है।

गोबर गैसप्लांट भी कुछ इसी प्रकार की प्रक्रिया पर आधारित है। इस प्लांट में बड़ी सी टंकी बनाई जाती है जो ऊपर से ढकी रहती है। उसमे दो पाइप लगा दिए जाते है। एक पाइप से टंकी में ढकेला जाता है तो दूसरे पाइप से गैस बाहर जाती है जो रसोईघर के गैस से जुडी होती है। इस गैस परियोजना में सिलेंडर का कोई झझट नहीं रहता है जिसके घर में पशुधन है, वे आजकल गोबर के कन्डे न बनाकर गैस व कहाद बनाने में ज्यादा ध्यान दे है। पर्यावरण को दूषित करने में वाहनों का भी बहुत बड़ा हाथ है। वाहनों से निकला धुआँ मनुष्य के फेफड़े को तो नुकसान पहुँचता ही है, वायुमंडल को भी प्रदूषित कर देता है।

अतः चीन और जापान की तरह हमे भी परम्परगत वाहन साइकिल का उपयोग आरम्भ कर देना चाहिए। जिससे न केवल वातावरण धुंए से बच सकेगा वरन शारीरिक व्यायाम होने से हमारा स्वास्थ्य भी उत्तम हो जायेगा। कई बीमारियो के उपचार हेतु साइकिलिंग की सलाह दी जाती है, जो आम साइकिल से महंगी होती है। योगासन से भी साइकिलिंग नाम से एक कसरत होती है। हाँ अधिक दुरी वाले स्थानों के लिए बस, लोकल, ट्रैन आदि की व्यवस्था सुलभ होनी चाहिये। तथा लोगो को भी अपनी मानसिकता बदलनी होगी और व्यक्तिगत वहां के बदले ट्रैन या बस में सफर करने की आदत डालनी होगी। आखिर पहले के लोग भी तो आना जाना करते थे, उनमे तो पैदल तीर्थ यात्रा करने की कूबत थी।

प्राचीन समय में लोग पैदल बहुत चलते थे, क्योकि उनके पास वाहन नहीं थे और न ही उनको इस चीज़ की दरकार थी। क्योकि उनके हाथ-पाँवों में काफी दम था। पैदल चलने से मानसिक

व शारीरिक सुख तो मिलता ही है, स्वास्थ्य भी उत्तम हो जाता है। कहा भी गया है, प्रातकाल की वायु को सेवन करते ताते मुख छवि बढ़त है। "बुद्धि होत बलवान"। ओशो ने भी कहा है की जब आप तनावग्रस्त हो दौड़ना या चलना चालू कर दे अथवा पानी पि ले थोड़ी सी देर में स्थिति बदल जाएगी। पैदल चलने समय हम अपने पास होते है। तनाव तथा प्रदूषण दोनों से दूर होते है। अतः मस्तिष्क का पूरा-पूरा लाभ उठा सकते है। उस समय लेखन सम्बन्धी अथवा अन्य कोई योजना बना सकते है।

वाहनों से दुर्घटना होना भी वाहनों का नकारात्मक पहलू दर्शाता है। अतः इस सम्बन्ध में अब गंभीरता से सोचने की आवश्कता है।

आज के मशीनरी युग में अनेक कल कारकहाने खूब जोर शोर से फलफूल रहे है, जो पर्यावरण को प्रदूषित करने पर तुले हुए है। उनसे निकलने वाला वेस्टेज नदियों अथवा मैदान में बहा दिया जाता है, जिससे नदिया प्रदूषित हो जाती है तथा मैदान दल-दल के रूप में बदल जाते है। मनुष्य की रोजी-रोटी छिन जाती है, वह अलग। अतः महात्मा गाँधी के सिद्धान्तानुसार हस्त-करघा आदि उद्योग पर जोर देना चाहिए जिससे करोड़ो लोगो को रोजगार मिल सके व पर्यावरण भी शुद्ध रहे। आज भी बनारस की साड़ी, भेरूगढ़ की चादर, कश्मीर की शाल और कालीन, झाबुआ की चादर आदि हाथो से ही बनाई जाती है। आज मानव का रोजगार मशीन ने छीन लिया है। अत : इस पर पुनर्विचार बहुत आवश्यक है। पर्यावरण संरक्षण में सबसे बड़ा हाथ वृक्षों का है। वक्ष वर्षा को तो आकर्षित तो करते ही है, लोगो को शुद्ध हवा, (ऑक्सीजन), छाया व फल भी देते है तथा जमीनी क्षरण या कटाव भी रोकते है। अतः वृक्षारोपण का कार्य जितनी जोर खरोश के साथ प्रतिवर्ष किया जाता है, उतने

ही उत्साह के साथ उनका संरक्षण, बचाव एवं देखभाल भी होना चाहिए। ताकि उनका पूरा-पूरा लाभ उठाया जा सके। हरियाली देख कर किसका मन मयूर नहीं नाचता? अतः मन की शांति और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भी वृक्षारोपण अथवा पेड़ पौधो का होना अत्यावश्क है।

पर्यावरण संरक्षण के परम्परगत तरीको के अंतर्गत रसोईघर की बगिया या किचन गार्डन का अपना अलग ही महत्व व सुख है। बर्तन साफ करने व किचन आदि से निकले पानी को घर की बगिया से जोड़कर फल, सब्जी और फूल आदि का भरपूर आनन्द लिया जा सकता है। मेने स्वयं ने घर में लौकी, गिलकी, कदद्, भुट्टे, भिंडी, मैथी आदि सब्जियों तथा केले, पपीता, अमरुद आदि फल और अनेक प्रकार के फूल सफलतापूर्वक उगाये है। बागवानी का अपना एक अलग हे आनंद होता है, जो बागवानी करने वाला हे जान सकता है। यदि घर छोटा है या फ्लेट है तो भी गमलो में भी ये सब चीजे उगाई जा सकती है। बशर्त है मन में कुछ करने की तमन्ना हो। पौधो में कहाद, पानी, निदाई, गुड़ाई आदि की यदि आवश्यकता पूरी कर दी जाये तो बागबानी सफल हो जाती है। इसमें व्यक्ति को असीम सुख मिलता है। सुमित्रानन्द पंत ने तो प्रकृति को "देवी माँ सहचरी प्राण" तक कहा है, जगदीश चंद वसु ने पहले हे कहा है कि वनस्पति में जीवन होता है। अतः वृक्ष हमारे मित्र है। उनका कटाव तथा उपेक्षा से हमें सावधान होना चाहिए, वन विभाग के आंकलन के अनुसार किसी भी प्रजाति का पेड़ अपने जीवन काल में जितनी ऑक्सीजन देता है, जितना जल व भूमि संरक्षण करता है और जैव विविधता कायम रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, उसका आकलन अगर रूपयो में हो तो वह 50 लाख से ज्यादा होती है। अतः

हमे अधिक से अधिक पेड़ लगाना व उनकी देखभाल करना चाहिए। नदी के किनारे पेड़ जल्दी पनपते है। अतः इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए। नीलगिरि, बबूल, अशोक, नीम, पारिजात, शीशम, सागवान व अनेक प्रकार के फूलो के वृक्ष ऐसे होते है, जो दीर्घकाल तक अपने स्थान पर पर्यावरण प्रहरी की भांति खड़े रहते है।

हमारे देश में लकड़ी का दुरूपयोग बहुत किया जाता है। गांव के घरो में महिलाएं चूल्हे में ईंधन के रूप में तो इसे नित्य जलती ही है। होली पैर भी जगह-जगह ढेरो लकड़िया जलाकर इसका दुरूपयोग किया जाता है। यदि एक गांव या शहर में १-२ जगह पर ही होली जलाकर रस्म पूरी कर ली जाये तो लाखो टन लकड़ी बच सकती है, जो फर्नीचर आदि बनाने में काम आ सकती है अथवा पर्यावरण संरक्षण में सहयोगी हो सकती है।

पानी हमारी मूलभूत आवश्यकता में से एक है और बड़ा अनमोल है। पानी का पर्यायवाची शब्द जीवन है। इसी से इसका महत्व सिद्ध हो जाता है। वैसे भी हाथ-कंगन को आरसी क्या? यह बात सभी जानते है और अनुभव करते है। रहीमदास जी भी कह गए है की "रहिमन पानी रखिये, बिन पानी सब सुन"। परन्तु खेद का विषय है कि पानी को पानी की तरह बहाया जाता है। एक और जहां घर में पानी का अपव्यय होता है, व्ही दूसरी ओर टूटी-फूटी पाईप लाइन, रिसते टेंकर (पानी के) तथा बिना टोटी वाले नल पानी को बर्बाद करने पर तुले रहते है। अतः इनकी और गंभीरता से सचेत होने की आवश्कता है।

जब वर्षा का मौसम होता है और अच्छी वर्षा भी हो जाती है, यहां तक कि कई नदियों में बाढ़ भी आ जाती है,उस समय ऐसा उपाय करना चाहिए जिसमे नहर द्वारा तालाबों, कुओं, बावड़ियों

आदि में पानी का संग्रह किया जा सके। प्राचीन समय में कुए, तालाब, बावड़ी, झील आदि बहुतायत से होते थे। अतः पानी का संकट यदा-कदा ही होता था, ऐसा नहीं की हर गर्मी के मौसम में पानी के लिये त्राहि-त्राहि हो जैसा कि आज के समय में होता है। वैसे भी आजकल बरसात बहुत काम होती है। अतः पानी का संरक्षण बहुत जरूरी हो गया है। साथ ही हमे पानी के रिचार्जिंग मेथड़ को भी अपनाना चाहिए। इसमें बरसात का पानी छत से उतार कर पाइप द्वारा जमीन के अंदर छोड़ दिया जाता है, जिससे भूतल स्तर बढ़ जाता है। हमारी पृथ्वी का तीन चौथाई हिस्सा पानी से ढका हुआ है। अतः पानी की कमी होना ही नहीं चाहिए। हमे तो समुद्र से पानी को फ़िल्टर करके प्रत्येक राज्य तक पहुँचाने की जुगाड़ करना चाहिए। जिसमे पानी की किलल्त हमेशा के लिए समाप्त हो जाये। निसंदेह यह एक महंगा काम होगा, क्योकि इसमें फ़िल्टर प्लांट के साथ-साथ रेलवे लाइन की तरह पाइप लाइन भी बिछानी पड़ेगी, पर बताइये कि अंतरिक्ष यात्रा, अणुबम, मिसाइल आदि निर्माण में क्या काम ख़र्च आता है ? भगीरथ जब स्वर्ग से गंगा नदी को पृथ्वी पर सकते है। पानी के लिए नलों सामने भीड़ और उसमे होती गाली-गलोच, मारपीट आदि से अब हमे मुक्ति पानी ही होगी। इसके अतिरिक्त नदियों तथा अन्य जलाशयो की सफाई भी सतत रूप से होनी चाहिए। ताकि हमे शुद्ध पानी मिल सके। नदियों में शव, कारकहानों का निष्कासित पदार्थ तथा कूड़ा करकट डालने पर सख्ती से पाबंदी होनी चाहिए। एक गांव में हालत यह है कि वह के लोग सीसा मिला पानी पिने को बाध्य है। जिससे उनके शारीरिक विकृति आ गई है। अतः शासन को इस तरफ भी अपना ध्यान रखना चाहिए। क्योकि शासन जनता का पालक होता है।

पर्यावरण संरक्षण में सूर्य की भूमिका बहुत अहम हो सकती है, यदि हम सही तरीके से सौर ऊर्जा का सदुपयोग या दोहन करें।

सौर ऊर्जा हमारे दैनदिन जीवन के अनेक क्षेत्रो में वरदान के रूप में सिद्ध हो सकती है। सोलर कूकर, सूर्य तपित काली टंकी का गर्म पानी, सूर्य की किरणे केंद्रित कर सौर शक्ति का निर्माण, जिससे कोयला जल तथा बिजली के समान ही एक ऊर्जा का सोर्स बनाया जा सकता है। इस पर विचार करना होगा, ईश्वर ने हमे नि:शुल्क प्रदान किया है। इस बात का भी अनुसंधान किया जा सकता है कि जैसे वर्षा का जल समुद्र की जल वाष्प को अपनी और खींचे तथा वर्षा कल में बादल बनकर बरसात करे तो वहां की जल समस्या भी हल हो सकती है। दूसरे देश में कृत्रिम वर्षा का चलन तो है ही, अतः हमे उनसे कुछ सीखना चाहिए।

सोलर कूकर एक और जहां ईंधन या गैस की बचत करता है और दूसरी ओर हमे स्वादिष्ट व गुणकारी भोजन भी प्रदान करता है, दाल, चावल, खीर, मक्खन से घी बनाना, मूंगफली दाने सेकना, दलिया सेकना, पूरणपोली का पूरण तैयार कारण, रवा सेकना, आलू, शक्करकंद बाफना तथा सब्जी बघार कर सोलर कूकर में रखकर तैयार करना आदि ऐसे फायदे है जो सोलर कूकर के उपयोग करने पर ही जाने जा सकते है। इतना ही नहीं शरद पूर्णिमा की रात को यदि इसमें उबला व ठण्डा किया दूध रख दिया जाये तो कुछ समय बाद उसकी शीतलता का स्वाद अमृत तुल्य हो जाता है। सूर्य किरण चिकित्सा का भी आजकल प्रचलन बढ़ रहा है जो विभिन्न रंगो की शीशियों में अणि, शक्कर, मिश्री, तेल आदि भरकर धूप में रखकर की जाती है। वैसी भी सूर्य किरण कीटाणु नाशक होती ही है, जो न केवल हमारे शरीर को विटामिन 'डी' प्रदान करती है। वरन हमारे घर के कीटाणु व आसपास के वातावरण को भी स्वच्छ रखती है।

सूर्य की किरणों को मेग्नीफाईग ग्लास द्वारा एक जगह फोकस कर बच्चे अक्सर कागज जलाकर खुश होते है। यदि इसी छोटे सिद्धांत को अपनाकर सोलर बिजली, सौर शक्ति निर्माण किया

जाये तो करोड़ो टन कोयले व बाधो पर होने वाले ख़र्च को रोका जा सकता है या कम किया जा सकता है।

देश का एक बड़ा सिर दर्द प्लास्टिक है। कहाने-पीने वस्तुओ लेकर दैनिक उपयोग की सभी वस्तुएँ प्लास्टिक की थैली में ही दुकान से घर तक आती है। प्लास्टिक के ग्लास, पानी की बॉटल, बाल्टी, मग आदि सब पर प्लास्टिक का एक छत्र राज्य है। उपयोग होने इन प्लास्टिक की वस्तुओ को भर फेक दिया जाता है, जो कभी नष्ट नहीं होती। वैसे ही पड़ी रहती है। इससे पर्यावरण में गंदगी बढ़ती रहती है। यदि यह पानी के रास्ते में आ जाये तो उसे रोक देता है और पशु इसे कहा ले तो उसकी आंतो में जमा होकर उसे बीमार बना है। अतः इसकी रोकथाम बहुत जरूरी है। प्राचीन समय में प्लास्टिक न बराबर था, अतः इसका प्रदूषण भी नहीं था, और मनुष्य पशु था जमीन सभी इसके दुष्परिणाम से बचे हुए थे। प्लास्टिक के स्थान पर कपड़ा, कागज या बर्तन का उपयोग होना चाहिए, जैसे कि पहले होता था। घी, तेल और दूध के लिये बर्तन ले जाने का रिवाज आज भी समाप्त नहीं हुआ है। प्लास्टिक जलने पर वायुमंडल को बहुत प्रदूषित करता है। इसकी रोकथाम जरूरी है।
ग्लोबल वार्मिंग अर्थात पृथ्वी का तापमान बढ़ जाना भी पर्यावरण के लिए हानिकारक तत्व है। विभिन्न प्रकार के ईंधन जैसे लकड़ी कोयला, पेट्रोल, डीजल व गैस आदि के जलने से कार्बनडाई आक्साइड उत्पन्न होती है, जिससे पृथ्वी का तापमान बढ़ता है। अतः इसके प्रति सचेत होने की अत्यधिक आवश्यकता है। वायुमंडल को इस प्रदूषण से बचाना हमारे स्वास्थ्य के लिए भी बहुत जरूरी है।

भौतिकवाद के शिखर पर बैठे होने के बावजूद देश में धार्मिक स्थानों का निर्माण उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। जो धार्मिक स्थान पहले बने हुए है, वे ही वाद-विवाद और खून-खराबे के घेरे में आ गए है तो धार्मिक स्थान बनने का क्या औचित्य है ? इसके बदले

गरीबो को शुद्ध जल, स्वच्छ मकान तथा सादा भोजन देना भी किसी बड़े पुण्य से काम नहीं है। स्वच्छता और ईश्वर था पर्यावरण और प्रकृति सब एक दूसरे के ही रूप है। अतः गरीबो को प्रदूषण मुक्त जीवन देना भी ईश्वर आराधना और पर्यावरण का संरक्षण करना है। क्योकि अधिकतर गंदगी गरीबो की बस्ती में ही होती है। अतः हमे श्री वियोगी हरि की इन पक्तियॉ पर गहराई से सोचकर काम करना होगा, जिसमे उन्होंने कहा है :-

मैं ढूढ़ता तुझे था मंदिर औ मस्जिदों में
तू ढूढ़ता मुझे था तब दीन के वतन में
तू आह बन किसी की मुझको पुकारता था
मैं था तुझे बुलाता संगीत में भजन में।

प्राचीन समय में एक गांव या शहर में एक मंदिर, मस्जिद, एक गुरुद्वारा और एक चर्च हुआ करते थे, तब लोगो में ज्यादा सौहाद्रता था सज्जनता थी। अब तो गली-गली धार्मिक स्थान है और उसी अनुपात में धार्मिक अंधता भी बढ़ गयी है। सबके व्यक्तिगत भगवान हो गए है। ओशो ने एक बहुत ही बड़ी और गौर करने लायक बात कहि है, कि "जितने भी धार्मिक स्थान हैं वे सब झगड़ा करके सबसे बड़े कारण है। हर सम्प्रदाय का व्यक्ति अपने धर्म के नाम पर दूसरे धर्म के व्यक्ति का रक्त बहाता है और इसे पुण्य का दर्जा देता है। ऐसे मानसिक प्रदूषण से मुनष्य को बचाना भी बहुत जरूरी है। धार्मिक स्थानों के निर्माण के बजाय यदि हैण्ड-पम्प कुएं, बावड़ी, धर्मशाला आदि का निर्माण किया जाय तो हमारे पर्यावरण की भी सुरक्षा हो सकती है।"

पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ देश में सामाजिक प्रदूषण भी अपने शिकंजे कस रहा है। राम राज्य में कर्मो के आधार पर चार वर्ण थे, पर आज जाति, उपजाति, जनजाति, वन्यजाति, आदिवासी आदि की अनेक शाकहा-प्रशाकहा फ़ैल चुकी है। जिससे मानव

मस्तिष्क संकीर्ण तथा प्रदूषित हो चूका हैं। अतः इसका भी समुचित निराकरण होना चाहिए, जो जनता व शासक दोनों के सामजस्य से सम्भव है।तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, विवेकानंद, रामकृष्ण परमहंस किस जाति अथवा सरनेम वाले थे, इससे किसी को कुछ भी लेना-देना नहीं है। संस्कृत ने भी सच ही कहा गया है कि:-

कार्याणि सर्वत्र पूज्यन्ते,पितृवंशो निरर्थक:,

वासुदेवं नमन्ति मे, वसुदेवं न मानवाः।

अर्थात कार्यो की ही सर्वत्र प्रशंसा होती है पितृवंश की नहीं जैसे की कृष्ण की पूजा करते हैं, उनके पिता वसुदेव की नहीं।

वातावरण की स्वच्छता भी पर्यावरण संरक्षण में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतः जनता में स्वच्छता के प्रति पूरी जागरूकता होना चाहिए, साथ ही शासक को भी इस मामले में गंभीरता ध्यान सेना चाहिए। कहते है- अमेरिका, इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया की सड़के इतनी साफ सुथरी है कि बिना जूतों के चलने का मन करता है। अतः हमे वायुमंडल तथा वातावरण की स्वच्छता के प्रति पूरी तरह से जागरूक होकर "मेरा भारत स्वच्छ भारत" का सिद्धांत अपनाना चाहिए।

राम राज्य के सम्बन्ध में महाकवि तुलसीदास जी ने यह स्पष्ट किया है कि समाज में पर्यावरण संतुलन एवं पर्यावरण संरक्षण में प्रजा एवं राजा दोनों का समान रूप से कर्तव्य होता है। दोनों के उचित सहयोग से देश प्रदूषण मुक्त व खुशहाल तथा उन्नति अग्रसर सकता है।

मानसिक प्रदूषण से बचने के लिए लोगो को अच्छे साहित्य का पठन-पाठन करना चाहिए। पुस्तकें मनुष्य की मित्र होती है, अतः अच्छी किताबों के रूप में अच्छे मित्र बनाना लाभदायक ही होता है। अच्छे विचारों से घर में शांति रहेगी, वातावरण सुखद रहेगा

तथा लक्ष्मी, सरस्वती व दुर्गा वास होगा। अर्थात धन, विद्या एवं शक्ति की प्राप्ति होगी।

बच्चो को मानसिक प्रदूषण बचाने के लिए कोर्स एवं किताबों में कमी करना बहुत आवश्यक हो गया है क्योकि उनके खेलकहाने के दिनों में पढ़ाई का तनाव उन्हें सही ढंग विकसित नहीं होने देता है। अधिक कोर्स से किताबे, अधिक बनती है और कागज के पेड़ो की कटाई होती है। अतः हमे बावत भी अवलोकन करना चाहिए। कोर्स में गुणवत्ता दिया चाहिए न संख्या पर। पहले लोगो बहुत कम कोर्स पढ़े फिर भी वे महान हुए ना ?

वायुमंडल की वायु का सदुपयोग करने हम पवन चक्की पर भी विचार कर सकते है। वायुमंडल की स्वच्छता हमे कई नेमतों नवाज सकती है। साथ ही मक्खी, मच्छर आदि के अभाव में बीमारियों से भी बचा सकती है।

धरती माता या जमीन के संरक्षण के लिए हमे रासायनिक कहाद और कीटनाशक तत्वों का प्रयोग बहुत कम करना चाहिए। इसके स्थान पर केंचुआ कहाद, पत्तियों का कहाद तथा कचरे तथा गोबर के कहाद का इस्तेमाल करना चाहिए। जिससे जमीन की उर्वरता बनी रहे। पौंआ में व्यक्ति ने गन्ने के छिलको से बिजली बनाई है। अतः ऐसे व्यक्तियों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

उपसंहार के रूप में मेरी एक कविता प्रस्तुत है:-

पेड़ो से होती वर्षा
वर्षा से खिलते है खेत
खेतो से खुशहाली आती
और तरक्की करता देश।

वन रक्षा करनी होगी
देश को यदि बचाना है
पर्यावरण की वृहत समस्या
समय रहते सुलझाना है।
वनस्पति में जीवन होता
जीवन हमे बचाना है
अहिंसा परमोधर्म का
दीपक हमे जलाना है।
मोटर गाड़ी स्कूटर वाहन
सोच समझ के चलना है
तेल बचाना कर्ज घटाना
पर्यावरण संवारना है।

उर्मिला मेहता, इन्दौर (म.प्र.)

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - उर्मिला मेहता

जन्म - 28 अप्रैल 1949, रतलाम (म.प्र.)

शिक्षा - एम.ए. हिन्दी (1971) अंग्रेजी साहित्य, बी.ए.

पता - ए.-2, फ्लेट नं. 602, अवासा ए.बी. रोड़
बीजलपुर, इन्दौर (म.प्र.)

मो. - 9981312686

ई मेल - mehta.urmila2012@gmail.com

कार्यक्षेत्र - अध्यापन - 1. नागपुर वि.वि. द्वारा संचालित 'इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल वर्क' नागपुर में स्नातक कक्षाओं तक का हिन्दी अध्यापन। 2. स्कालर्स होम भोपाल 3. श्री गुरु तेग बहादुर पब्लिक स्कूल रतलाम में भी हिन्दी तथा संस्कृत का अध्यापन।

खेलकुद - 1. सागर युनिवर्सिटी की युनिवर्सिटी चैंपियन- टेबल टेनिस। 2. ऑल इंडिया नार्थ जोन कानपुर में टेबल टेनिस में क्वार्टर फायनल तक पहुँचने का गौरव। 3. स्कूल व कॉलेज में बेडमिंटन, हाय जम्प, लॉग जम्प, रेस, भाला फेंक, गोला फेंक, कैरम आदि के विजेता होने के प्रमाण पत्र एवं कप्स। 4. रोटरी क्लब में विजेता व उपविजेता के स्मृति चिन्ह।

प्रकाशन - लेखन - विद्यार्थी जीवन से साहित्य लेखन में सक्रिय । महाविद्यालयीन पत्रिकाओं तथा स्थानीय समाचार पत्रों में लेखन के पश्चात् नई दुनिया के 'अधबीच''खुलाखाता' एवं दैनिक भास्कर के 'राग दरबारी' स्तंभ में व्यंग रचनाएँ प्रकाशित। आकाशवाणी भोपाल तथा इंदौर से अनेक वार्ताएँ एवं काव्य प्रसारण।

प्रकाशित पुस्तके - 1. उर्मिला (खण्ड काव्य) 2. ऐसा आपको कब से है? (व्यंग्य संग्रह)
3. भावांजलि (काव्य संग्रह) 4. ऐसे बनाई मैने अपनी पहचान (आलेख संग्रह)
5. एक कहानीकार की रचना प्रक्रिया (व्यंग्य संग्रह)

मातृभाषा
www.matrubhashaa.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-86666-41-3

मूल्य- 40/-